IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 10, Iss 04, 2021

राजस्थान के विशेष संदर्भ में मध्यपाषाण कालीन आजीविका पद्वति के पहलुओं का विश्लेषण

Dr. Ishwar Dan
Assistant Professor
Department of History
Satyawati College
University of Delhi

लगभग 10,000 वर्ष पहले प्लीस्टोसीन युग व पुरापाषाण काल के पश्चात् होलोसीन युग के साथ ही आदि मानव के खानाबदोश शिकारी जीवन से कृषि व पशुपालन की ओर संक्रमण आरम्भ हुआ, जिसे मध्यपाषाण काल की संज्ञा दी जाती है। मध्यपाषाण काल शिकार व खाद्य संक्रमण से पशुपालन व खाद्य उत्पादन की ओर संक्रमण को प्रतिबिंबित करता है। मध्यपाषाण काल के दौरान मानव ने शैलाश्रयों, जलोढ़ मैदानों, चट्टानी क्षेत्रों, रेतीले टीलों और तटीय क्षेत्रों को ;अपना (विकास) स्थान के रूप में चुना।[1]

इस काल की मुख्य विशेषता दबाव तकनीक व पफलकों से बने ज्यामितीय आकार के सूक्ष्मपाषाण उपकरणों का इस्तेमाल है। होलोसीन काल के दौरान के पर्यावरणीय व जलवायु के परिवर्तनों का वनस्पति व जीव–जन्तुओं पर प्रभाव पड़ा तथा मानव की जनसंख्या भी बढ़ने लगी। मानव–विकास के इस दौर में मानव ने बटिकाश्म व बड़े कठोर पत्थरों की बजाय चर्ट, अगेट व जैस्पर जैसे कीमती पत्थरों से सूक्ष्म औजार बनाना आंरभ किया। जो ज्यादा तेज, धरदार व बहुपयोगी थे। छोटे–जानवरों के शिकार के लिए इस काल के दबाव तकनीक से बने सूक्ष्मपाषाण पफलक उपयुक्त बहुपयोगी थे। जिनमें पत्थर व हड्डी से बने ज्यामितीय औजार, पफलकदार औजार, मिश्रित औजार (दरांती), खुरचनी, तक्षणी, ब्लेड, कोर और वेध्क आदि प्रमुख थे।[2] इनका प्रयोग भालाग्र, बाणाग्र, छुरी, चाकू, हंसिया आदि बनाने के लिए किया जाता था। तक्षणी, पोईंट, खुरचनी, बाणाग्र तथा अन्य ज्यामितीय उपकरण लकड़ी व हड्डी के हत्थों के सहारे, मिश्रित उपकरणों के रूप में उपयोग में लाए गए।[3]

अनुसंधनों की इसी शृंखला में कैम्ब्रिज के ब्रिजेट ऑलचिन, ऑक्सपफोर्ड विश्वविद्यालय के ए.एस. गोडी तथा एम. एस. विश्वविद्यालय बडौदा के के.टी.एम. हेगडे आदि ने चतुर्थिकी के भूगर्भिक जमावों के तलछट व पेडोलोजिकल आदि का विश्लेषण किया गया है। आलचिन व गौडी की टीम ने चतुर्थिकी के दौरान पश्चिमी भारत में जलवायु के परिवर्तन और पुरा–पर्यावरणीय अध्ययन को दर्शाया।[4]

वी.एन. मिश्रा ने 1962–63 में बेड़च व सहायक नदियों पर स्थित उदयपुर व चितौडगढ़ जिलों में 7 मध्यपाषाण कालीन और 12 स्थल आहड़ संस्कृति वाले स्थल खोजे है।[5] राजस्थान में सूक्ष्मपाषाण उपकरणों की प्राप्ति सोजत[6] बागोर

---

[1] एच.डी. संकालिया, *स्टोन एज टूल्स: देयर टेक्निक्स, नेम्स एण्ड प्रोबेबल पफंक्शन,* पूना, डेक्कन कॉलेज, 1982, पृ. 45–58 डी. संकालिया, 1982, *पूर्वोक्त,* पृ. 23

[2] वी.के. जैन, *प्रिहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑपफ इण्डिया,* दिल्ली, डीके प्रिंट वर्ल्ड, 2008, पृ. 98

[3] एच.डी. संकालिया, 1982, *पूर्वोक्त,* पृ. 69–77

[4] ए.एस. गोड़ी, बी ऑलचिन, एण्ड के.टी.एम. हेगड़े, 'द पर्फॉर्मर एक्सटेंशन ऑपफ द ग्रेट इण्डियन सेण्ड डेजर्ट', *द ज्योग्रपिफकल जर्नल,* वो. 139;2द्ध, 1973, पृ. 243–257

[5] वी.एन. मिश्रा, 1967, *पूर्वोक्त,* पृ. 85–116

[6] वी.एन. मिश्रा, लेट स्टोन एज इन राजस्थान, *राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस,* वो. 1, 1967, पृ. 20

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 10, Iss 04, 2021

;भीलवाड़ाद्ध[7] तिलवाड़ा (बाड़मेर)[8] से प्राप्त हुई है। लूणी नदी पर स्थित तिलवाड़ा का उत्खनन विजयकुमार द्वारा राज्य पुरातत्व विभाग के सहयोग से 1967 में किया गया। यहाँ से चाक निर्मित मृद्भाण्ड मिले हैं।[9]

भारत के प्रसि(मध्यपाषाण कालीन स्थलों के उत्खननों में से एक मध्य पाषाणकालीन पुरास्थल 'बागोर'[10] है, जो भीलवाड़ा में कोठारी नदी पर स्थित है। बागोर का उत्खनन विजय कुमार द्वारा 1967–68 में व बाद में विस्तृत उत्खनन वी.एन. मिश्रा ने किया था।[11] यहाँ का आवासीय जमाव 3 सांस्कृतिक स्तरों में है। आरम्भिक अवस्था में सूक्ष्मपाषाण, पशुओं के अवशेष, तथा मानव कंकाल मिले हैं।[12] मध्यावस्था में हस्तनिर्मित मृद्भाण्ड व कुछ तांबे की वस्तुएं मिली है तथा उफपरी अवस्था में पहिये से निर्मित मृद्भाण्ड मिले हैं। यहाँ से पेफज I, II, III का निर्धरण किया गया है।[13]

इस स्थल पर मध्यपाषाण काल से ताम्रपाषाण काल व पिफर ऐतिहासिक काल तक का जमाव मिला है। यहाँ से मध्यपाषाण काल के निवास स्थान भी प्राप्त हुए हैं, जो मिट्टी व प्रस्तर की दीवारों से निर्मित हैं। इस स्थल से मध्यपाषाण कालीन उत्कृष्ट पाषाणोपकरणों के श्रेष्ठ प्रमाण प्राप्त हुए। यह संभवतः पाषाणोपकरणों का उद्योग स्थल रहा होगा। इन पाषाणोपकरणों में ब्लेड्स, कोर, खुरचनी, त्रिकोण, लुनेट्स आदि ज्यामितीय औजार प्रमुख हैं। ये सभी उपकरण चर्ट, कैल्सीडनी, क्वार्टज् आदि अर्ध कीमती प्रस्तरों से निर्मित हुए हैं। इस स्थल पर तीन सांस्कृतिक चरण प्राप्त हुए हैं। इनमें से प्रथम मध्यपाषाण कालीन है, जहाँ प्रस्तर की दीवार प्राप्त हुई है जो गोलाकार है। कई जानवरों की टूटी हुई, जली हुई हड्डियाँ भी प्राप्त हुई है। यहाँ सिलबट्टे प्राप्त हुऐ हैं। पशुपालन संभवतः आरम्भ हो चुका था। दूसरे चरण में मृद्भाण्ड, ताम्रोपकरण, मनकें भी प्राप्त हुए हैं। संभवतः इन लोगों का ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों से संपर्क भी हुआ था। अंतिम चरण लौहयुगीन है जहाँ लोहे के औजार, कांच के मनके व ईंटों के मकान प्राप्त हुए हैं।[14]

वी.एन. मिश्रा द्वारा (2007) गजेटियर ऑपफ आर्कियोलॉजिकल साइट्स इन राजस्थान में 160 प्रतिवेदित मध्यपाषाणिक पुरास्थलों की सूची दी गई है।[15] जिलेवार विवरण इस प्रकार है। उदयपुर–6, जोध्पुर–22, भीलवाड़ा में 18, चितौड़–16, जयपुर–14, अजमेर–12, नागौर–8, जैसलमेर–7, टोंक–6, जालोर–5, पाली–5, बाड़मेर–5, धैलपुर–3, कोटा–3, झालावाड़–1, और सिरोही जिले में 1 स्थल प्रतिवेदित है।

मानव द्वारा जीवन निर्वाह के लिए अपनाये गए तौर–तरीकों व जीविका प(ति में समय–समय पर परिवर्तन होते रहे हैं, क्योंकि यह सांस्कृतिक, जैविक व अजैविक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। प्रागैतिहासिक लोगों द्वारा अपनायी गई भू–उपयोग प(तियों में विविध्ता व निरंतरता के लक्षण दिखाई देते हैं। आजीविका पद्वति में शिकार व संग्रहण से कृषि व पशुपालन की ओर संक्रमण महत्वपूर्ण परिघटना थी।

पशु आहार (Animal Food) और पशुपालन की ओर संक्रमण

---

7 *आई.ए.आर.*, 1967–68, पृ. 39–40

8 *वही*, पृ. 41–42

9 *आई.ए.आर.*, 1982–83, पृ. 68–69

10 *आई.ए.आर.*, 1967–68, पृ. 41–42, 1968–69, पृ. 26–28, 1969–70, पृ. 32–34

11 वी.एन. मिश्रा, 'बागोर ए लेट मेसोलिथिक सेटलमेंट इन नॉर्थ–वेस्ट इण्डिया' *वर्ल्ड आर्कियोलॉजी*, वो. 5;1द्ध, 1973, पृ. 92–110

12 वी.एन. मिश्रा, 'बागोर', इन ए. घोष, ;संपा.द्ध *एनसाइक्लोपीडिया ऑपफ इण्डियन आर्कियोलॉजी, ए गजेटियर ऑपफ एक्सप्लोर्ड एण्ड एक्सकेवेटेड साइट्स*, वो. 2, दिल्ली, मनोहरलाल मुंशीराम, 1989, पृ. 35–37

13 वी.एन. मिश्रा, 1973, *पूर्वोक्त*, पृ. 92–110

14 वी.एन. मिश्रा, 1973, *पूर्वोक्त*, पृ. 92–110

15 वी.एन. मिश्रा, 2007, *पूर्वोक्त*, पृ. 349–50

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 10, Iss 04, 2021

पशुपालन, आर्थिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण जीवन प(ति है, जिसमें मानव के नियंत्राण में पशुओं के भोजन, आवास, स्वास्थ्य और प्रजनन आदि का ध्यान रखा जाता है। आरम्भिक काल से अभी तक भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन भारतीय जनजीवन के मुख्य आधर रहे हैं। पालतुकरण की इस प्रक्रिया की शुरुआत मध्यपाषाण काल में आरम्भ हुई। मिस बेट का मानना है कि मध्यपाषाण काल की नातुपिफयन संस्कृति के लोगों ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतु बनाया।[16] पशुओं को पालतु बनाने को लेकर विद्वानों में अलग मत है। पालतुकरण की प्रक्रिया को धर्मिक महत्व, पशु बलि, तथा पशु उत्पादों ;मांस, खाल, उफन, दूध्द्ध के रूप में और आर्थिक महत्व के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

भारत में लगभग 50 स्तनपायी, 1200 प्रजातियों के पक्षी, लगभ 3000 प्रजातियों के कीड़े, उभयचर, मछलियाँ और सरीसृप विभिन्न जलवायविक और वानस्पतिक जोन में पाए जाते हैं। इन स्तनपायी और अन्य जानवरों में सांभर, चीतल, खरगोश, हिरण और तीतर, बटेर जैसे पक्षी आदि का शिकार आज भी हाड़ौती क्षेत्रा के भील, मीणा व सहरिया जनजातियों द्वारा किया जाता हैं। कन्दमूल व मांस के साथ ही मछली भी उनके आहार का हिस्सा बन चुकी थी। हाड़ौती क्षेत्रा के जनजातीय समुदाय आज भी पक्षियों के अंडे, शहद, गोंद व वानस्पतिक उत्पाद और कई कीटों के उत्पादों का इस्तेमाल आहार के रूप में करते हैं। इसके अतिरिक्त महुआ संग्रहण और तेंदु पत्ते का संग्रहण भी जीविका पद्वति का साध्न है।

हाड़ौती क्षेत्रा के कई पुरास्थलों के शैल चित्राांकनों में शिकार दृश्य और कई पशुओं के चित्राांकन से तत्कालीन मानव के पशुओं के साथ परिचय एवं खाद्य रणनीतियों की जानकारी प्राप्त होती है। गोलपुर व आलनियां के शैलाश्रयों में गाय, वृषभ, भेड़, बकरी, हिरण, बाघ व बारहसिंगा आदि पशुओं का अंकन मिलता हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि प्रागैतिहासिक काल में मानव का इन पशुओं से परिचय हो चुका था। भीमलत के चित्राांकन में चीतल व बाघ के लिए शिकार हेतु आखेटकों को तीर एवं भालों युक्त दर्शाया गया है ;छायाचित्रा सं. 14.1)। जो सामुहिक शिकार की रणनीति एवं धतु ज्ञान को दर्शाता है। यहाँ के एक चित्रा में चार पुरुष दो नारी एवं दो बालक आकृतियों का अंकन उपलब्ध है, जो तत्कालीन शिकार आधरित जीविका प्रणाली में महिलाओं की भूमिका एवं श्रम विभाजन को स्पष्ट करता है ;छायाचित्रा सं. 14)।

मध्यपाषाण काल से सम्बन्धित जीवन निर्वाह पद्वति की महत्वपूर्ण जानकारी शोध क्षेत्रा के निकटवर्ती पुरास्थल बागोर ;भीलवाड़ाद्ध के उत्खनन से प्राप्त होती है। यहाँ मध्यपाषाणकाल का समय 5वीं–4वीं सहस्राब्दि पूर्व माना गया है। यहाँ वी.एन. मिश्रा व एल.एस लेशनिक के नेतृत्व में उत्खनन के पफलस्वरूप सूक्ष्मपाषाण उपकरण, अस्थि उपकरण, अस्थि अवशेष एवं ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं।[17] बागोर का सांस्कृतिक स्तर विन्यास 3 चरणों में किया गया है। जिसमें प्रथम चरण ;5000–2800 ई.पू.द्ध मध्यपाषाण, द्वितीय चरण 2800–600 ई.पू. ताम्रपाषाण, तृतीय चरण 500 ई.पू. से दूसरी शताब्दी ई. तक लौहयुग है। इस प्रकार बागोर से मध्यपाषाण से ताम्रपाषाण व आरम्भिक ऐतिहासिक काल तक निरंतरता का पता चलता है।

बागोर से पशुपालन के आरम्भिक प्रमाण प्राप्त होते हैं। पी.के. थॉमस[18] ने यहाँ से प्राप्त अस्थि अवशेषों में से 15.7÷ पालतू मवेशी तथा 64.4÷ भेड़/बकरियों के रूप में पहचाना है। सूअर व जंगली सूअर 3.7÷, भैंस 0.8÷, काला हिरण तथा गजेला 4.4÷, बूरीदाह रिण 4.8÷, सांभर, 4.3÷, खरहे 0.6÷, ध्ूसर नेवला 0.8÷, भारतीय लोमड़ी 0.5÷ तथा इसके अतिरिक्त चूहे, कछुए और मेंढ़क की अन्य प्रजातियों की अस्थियों की गणना की हैं। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है

---

16 एपफ.ई., ज्यूनर, *ए हिस्ट्री ऑपफ डोमिस्टिकेटेड एनिमल्स,* लदंन, हारपर एण्ड रॉ पब्लिशर, 1963, पृ. 22

17 वी.एन. मिश्रा, 'बागोर', इन ए. घोष, ;संपा.द्ध *एनसाइक्लोपीडिया ऑपफ इण्डियन आर्कियोलॉजी ए गजेटियर ऑपफ एक्सप्लोर्ड एण्ड एक्सकेवेटेड साइट्स,* वो. 2൦ दिल्ली, मनोहर लाल मुंशीराम, 1989, पृ. 35–37

18 पी.के. थॉमस एण्ड पी.पी. जोगलकर, 'पफॉनल स्टडीज इन आर्कियोलॉजी', *मेमोयर्स ऑपफ द जियोलॉजिकल सौसायटी ऑपफ इण्डिया,* वो. 32, 1995, पृ. 496–514

इस क्षेत्रा में मध्यपाषाणिक समुदायों का इन जानवरों से परिचय रहा होगा। शिकार व संग्रहण के अतिरिक्त इन जानवरों के उत्पादों का भी आहार में इस्तेमाल आरम्भ हुआ होगा।

उमेश चट्टोपाध्याय[19] ने शिकारी संग्राहक समुदाय के मृतकों को कब्र में दपफनाने की प्रथा के उद्भव और जीवन निर्वाह तथा निवासीय प्रतिकृतियों के बीच गंगा नदी घाटी के मध्यपाषाण कालीन सन्दर्भ में अध्ययन करने का प्रयास किया है। मानवशास्त्रियों ने अध्ययन के आधर पर मृतकों को दपफनाने के लिए निर्धरित औपचारिक भूमि और सामुदायिक रूप से उपभोग किये जाने वाले संसाध्नों पर सार्वजनिक अध्किार के बीच सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की है। चट्टोपाध्याय के अनुसार ऐसे उत्तराध्किार शायद कछुआ और मछली जैसे जलीय संसाध्नों से सम्बन्ध्ति थे, जिनका एक ओर पौष्टिक महत्व था, दूसरी ओर से भोजन के लिए वहाँ की ;महादहाद्ध परिस्थितियों में अध्कि विश्वसनीय स्रोत थे।[20]

बागोर में केल्सीडनी की उपलब्ध्ता के सन्दर्भ में गुरुचरण खन्ना[21] का मानना है कि इससे मध्यपाषाणिक समुदायों द्वारा कच्चे माल की प्राप्ति के लिए की गई यात्राएं और विनिमय से सम्बन्ध्ति आयामों की जानकारी प्राप्त होती है। चर्ट और क्वार्टज तो यहाँ स्थानीय रूप से उपलब्ध है, लेकिन अच्छी केल्सीडनी की उपलब्ध्ता बागोर के दक्षिण–पूर्व में दक्कन ट्रेप ;90 किमी. की दूरी परद्ध में है। शायद इसी क्षेत्रा से मध्यपाषाण कालीन उपकरण निर्माताओं उसे प्राप्त करते थे। मानसून के बाद वाले मौसम के अनुसार बागोर के मध्यपाषाणिक लोग अपने मवेशियों के लिए चारागाह की तलाश में दक्षिण–पूर्वी इलाकों में चले जाते थे। उस क्षेत्रा से पशुपालन के प्रमाण मिले हैं।[22] मध्यपाषाण के अंतिम चरण में तांबे के प्रमाणों से इन लोगों में कृषक व धतु के ज्ञान और आहड़ के लोगों के साथ सम्बन्धें की जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी या हाड़ौती क्षेत्रा में मध्यपाषाण काल के दौरान मानव समुदायों की आवाजाही व गतिशीलता प्रचलित थी। साथ ही इस दौरान संसाध्नों की प्राप्ति हेतु दूरस्थ यात्राएँ होने से अन्य समुदायों के साथ आर्थिक सम्बन्ध भी विकसित हुए होंगे। इसे वस्तु विनियम व व्यापारिक व्यवस्था के आरम्भिक प्रमाणों के रूप में देखा जा सकता है।

बागोर में वृत्ताकार झोपड़ियों के प्रमाण मिले हैं, जिसकी पफर्श पत्थर की पट्टिकाओं (Slab) से बनी है। बड़े पैमाने पर मिली अस्थियों से यह अनुमान लगता है कि वहाँ कोई बूचड़खाना रहा होगा। बागोर से मिले गेरु के टुकड़े, सिलबट्टे, एवं पिसाई पत्थर से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मध्यपाषाण काल में इस क्षेत्रा के समुदायों द्वारा आहार में खाद्यान्नों का इस्तेमाल करना आरम्भ किया होगा। बागोर से प्राप्त छोटे पक्षियों की हड्यिाँ और तीर के आकार के उपकरण छोटे जानवरों के मांस का अध्कि इस्तेमाल होता था। इस समय मानव मांस व खाद्य पदार्थों को पकाकर या भूनकर खाने लगा था। परिवार की स्त्रिायाँ भी संभवतः वनस्पति से प्राप्त भोजन सामग्री एकत्रित करती होगी।[23] इस समय मानव भेड़, बकरी, बारहसिंघा, हिरण, गीदड़, छिपकली, नीलगाय व चूहे मारकर खाता था। पशुपालन के कोई

---

19 उमेश चट्टोपाध्याय, 'सेटलमेंट पैटर्न एण्ड स्पेटियल ऑरगेनाइजशेन ऑपफ सब्सिस्टेंस एण्ड मोरचरी प्रक्टिसेस इन द मेसोलिथिक गेंगेज वैली, नॉर्थ, सेन्ट्रल इण्डिया', *वर्ल्ड आर्कियोलॉजी* वो. 27(3) पेफब्रुअरी, हंटर, गेदरर लैण्ड यूज, 1996, पृ. 461–476, उ(ृत उपिन्दर सिंह, 2007, पूर्वोक्त, पृ. 85

20 उमेश चट्टोपाध्याय, *पूर्वोक्त,* पृ. 461–476, उ(ृत उपिन्दर सिंह, 2007, पूर्वोक्त, पृ. 85

21 गुरुचरण एस. खन्ना, 'पैटर्न्स ऑपफ मॉबिलिटी इन द मेसोलिथिक ऑपफ राजस्थान' *मैन एण्ड इन्वायरमेंट,* वो. 18;1द्ध, 1993, पृ. 49–55

22 गुरुचरण खन्ना, *पूर्वोक्त,* पृ. 49–55, उ(ृत उपिन्दर सिंह, 2008, *पूर्वोक्त,* पृ. 87

23 आर.पी. शर्मा, 'ए नोट ऑन ट्राइबस एण्ड पीजेन्टस, *पुरातत्त्व,* वो. 6, 1972–73, पृ. 61

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 10, Iss 04, 2021

प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। मुख्यतः वन्य प्राणियों का मांस खाया जाता था।[24] इस समय मानव ने नदियों के किनारे रहना आरम्भ कर दिया था, जिसका संभवतः उद्देश्य मछली व मुर्गीपालन से रहा होगा।[25]

बागोर के प्रथम चरण में शवागाह में दपफन कंकाल प्राप्त हुआ है, जिसके साथ मृद्भाण्ड, प्याले, तश्तरी व लोटा समान मृदपात्रा मिले हैं। कुछ अन्य अस्थियाँ भी प्राप्त हुई है, जिनको शायद मांस के रूप में शव के साथ रखा गया है। शव का सिर पश्चिम व पैर पूर्व दिशा की ओर पाये गये हैं। मृतक के साथ सामग्री, भोजन व पानी का रखना तत्कालीन मानव के सामाजिक परम्परा के विकास एवं शव के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण का परिचायक है। शव को घर के भीतर ही दपफनाया गया है।[26] इस प्रकार मानव के मृत्यु उपरान्त के विश्वासों व धर्मिक परम्पराओं के विकास की शुरुआत को देखा जा सकता है।

आलनियां में सामुहिक नृत्यरत मानव का दृश्य कला व सामाजिक जीवन पद्वति में विकास को दर्शाता है। इन चित्रों में हाथी व गेंडा का अंकन रेखाओं के माध्यम से किया है। गाय व भैंस के चित्रों में स्तनों का अंकित नहीं होना, दर्शाता है कि मानव इनके दूध के उपयोग से परिचित नहीं हुआ होगा।[27] टिपन्या महादेव व दरा के शैल चित्रों में शिकार के दृश्यों तथा वृषभ व भालु और एक अन्य चित्रा में पशुओं को रस्सी से बांध दिखाया गया है, साथ ही रथ के पहियों का चित्रांकन है। इससे पशुओं की पालतु बनाने की प्रक्रिया व पहिये की जानकारी का पता चलता है। इससे प्रागैतिहासिक काल से ताम्रपाषाण व आरम्भिक ऐतिहासिक काल की ओर संक्रमण और मानव की जीविका पद्वति में विभिन्न पशुओं के शिकार व खाद्य रणनीतियों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार के विविध् चित्रांकन तत्कालीन परिवेश को प्रतिबिंबित करते हैं।

होलोसीन काल के आगमन के साथ ही पर्यावरणीय व जलवायु के बदलावों, तापमान में वृ(ि व वर्षा में वृ(ि से नये पौधें व जीवों का विकास हुआ। इस प्रकार के वानस्पतिक व जैव संसाध्नों के विकास से मानव की जनसंख्या में भी वृद्धि हुई। शोध् क्षेत्रा में मध्यपाषाण काल के पुरास्थलों की संख्या में वृ(ि इस बात को प्रमाणित करती है। इस काल में शिकारी–संग्राहक समुदाय तत्कालीन स्थायी जीवन युक्त कृषक समाजों के सम्पर्क में आए होंगे। लगभग चौथी सहस्राब्दि के मध्य से दक्षिण–पूर्व राजस्थान में कृषि आधरित स्थायी समाज का विकास हुआ। मेवाड़ में स्थित ताम्रपाषाण कालीन आहड़ संस्कृति सादृश्य नमाना व राजगढ़ आदि पुरास्थलों से शोध् क्षेत्रा में इस संस्कृति के विकास की जानकारी प्राप्त होती है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि इन जीवों व प्रारूपों की इस क्षेत्रा में उपलब्ध्ता रही है और समय काल के अनुसार मानव द्वारा इसका दोहन किया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चट्टोपाध्याय, उमेश 'सेटलमेंट पैटर्न एण्ड स्पेटियल ऑरगेनाइजशेन ऑपफ सब्सिस्टेंस एण्ड मोरचरी प्रक्टिसेस इन द मेसोलिथिक गेंगेज वैली, नॉर्थ, सेन्ट्रल इण्डिया', *वर्ल्ड आर्कियोलॉजी* वो. 27;3द्ध पेफब्रुअरी, हंटर, गेदरर लैण्ड यूज, 1996, पृ. 461–476, उ(त उपिन्दर सिंह, 2007, पूर्वोक्त, पृ. 85
- गौड़ी, ए.एस. ऑलचिन, बी एण्ड हेगड़े, के.टी.एम. 'द पफॉर्मर एक्सटेंशन ऑपफ द ग्रेट इण्डियन सेण्ड डेजर्ट', *द ज्योग्रपिफकल जर्नल,* वो. 139;2द्ध, 1973, पृ. 243–257
- *आई.ए.आर.,* 1967–68, पृ. 41–42, 1968–69, पृ. 26–28, 1969–70, पृ. 32–34
- खन्ना, गुरुचरण एस. 'पैटर्न्स ऑपफ मॉबिलिटी इन द मेसोलिथिक ऑपफ राजस्थान' *मैन एण्ड इन्वायरमेंट,* वो. 18;1द्ध, 1993, पृ. 49–55
- ज्यूनर, एपफ.ई., *ए हिस्ट्री ऑपफ डोमिस्टिकेटेड एनिमल्स,* लदंन, हारपर एण्ड रॉ पब्लिशर, 1963, पृ. 22
- मिश्रा, वी.एन. *प्रि एण्ड प्रोटो–हिस्ट्री ऑपफ बेड़च बेसिन, साउथ राजस्थान,* पूना, दक्कन कॉलेज, 1967, पृ. 204

[24] *आई.ए.आर.,* 1967, पृ. 42

[25] वी.एन. मिश्रा, *प्रि एण्ड प्रोटो–हिस्ट्री ऑपफ बेड़च बेसिन, साउथ राजस्थान,* पूना, दक्कन कॉलेज, 1967, पृ. 204

[26] *आई.ए.आर.,* 1968–69, पृ. 27

[27] मुरारी लाल शर्मा, *पूर्वोक्त,* पृ. 226

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

- मिश्रा, वी.एन. 'बागोर ए लेट मेसोलिथिक सेटलमेंट इन नॉर्थ–वेस्ट इण्डिया' *वर्ल्ड आर्कियोलॉजी,* वो. 5;1द्ध, 1973, पृ. 92–110
- मिश्रा, वी.एन. 'बागोर', इन ए. घोष, ;संपा.द्ध *एनसाइक्लोपीडिया ऑपफ इण्डियन आर्कियोलॉजी ए गजेटियर ऑपफ एक्सप्लोर्ड एण्ड एक्सकेवेटेड साइट्स,* वो. 2ए दिल्ली, मनोहर लाल मुंशीराम, 1989, पृ. 35–37
- शर्मा, आर.पी. 'ए नोट ऑन ट्राइबस एण्ड पीजेन्टस, *पुरातत्त्व,* वो. 6, 1972–73, पृ. 61
  थॉमस, पी.के. एण्ड जोगलकर, पी.पी. 'पफॉनल स्टडीज इन आर्कियोलॉजी', *मेमोयर्स ऑपफ द जियोलॉजिकल सौसायटी ऑपफ इण्डिया,* वो. 32, 1995, पृ. 496–514
- वी.एन. मिश्रा, लेट स्टोन एज इन राजस्थान, *राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस,* वो. 1, 1967, पृ. 20